INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

घासी जाति के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का विश्लेषण (झारखण्ड के राहे प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में)

प्रवर कुमार महतो
शोधछात्र
स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग
राँची विश्वविधालय, राँची

सारांश

प्रस्तुत शोध लेख घासी जाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य घासी जाति की सामाजिक स्थिति, आर्थिक जीवन, शिक्षा, पारिवारिक संरचना तथा सांस्कृतिक व्यवहारों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के तथ्यों का संकलन किया गया। प्राथमिक आंकड़े राहे प्रखण्ड के 70 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त किए गए। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि समुदाय में शिक्षा, राजनीतिक जागरूकता तथा आधुनिक जीवनशैली के प्रति रुचि में वृद्धि हुई है, किंतु आर्थिक कठिनाइयाँ और सीमित संसाधन अभी भी विकास में बाधक हैं। रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास तथा पारंपरिक सांस्कृतिक व्यवहारों का प्रभाव आज भी समुदाय में विद्यमान है, हालांकि आधुनिकता और मीडिया के प्रभाव से जीवनशैली में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि घासी समुदाय वर्तमान समय में पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

मुख्य शब्द : घासी जाति, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवर्तन, राहे प्रखण्ड, झारखण्ड

भूमिका

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में जाति व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विभिन्न जातियों की जीवनशैली, परंपराएँ, सामाजिक संबंध तथा सांस्कृतिक व्यवहार समय के साथ निरंतर परिवर्तित होते रहे हैं। आधुनिक शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगीकरण, संचार माध्यमों के विस्तार तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं ने समाज के अनेक वर्गों के जीवन में व्यापक बदलाव उत्पन्न किए हैं। झारखण्ड राज्य की अनुसूचित जातियों में घासी जाति एक महत्वपूर्ण समुदाय है, जिसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान अपनी विशिष्ट परंपराओं, रीति-रिवाजों और आर्थिक गतिविधियों से निर्मित हुई है। राहे प्रखण्ड में निवास करने वाला यह समुदाय वर्तमान समय में पारंपरिक जीवन पद्धति से आधुनिक सामाजिक परिवेश की ओर अग्रसर दिखाई देता है। इसी संदर्भ में घासी जाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक बन जाता है। घासी जाति ऐतिहासिक रूप से सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वंचित समुदायों में सम्मिलित रही है। परंपरागत व्यवसाय, सीमित शैक्षिक अवसर तथा सामाजिक असमानता ने लंबे समय तक इनके विकास को प्रभावित किया। स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा के प्रसार, आरक्षण नीति, सरकारी योजनाओं तथा लोकतांत्रिक

जागरूकता के कारण इस समुदाय की स्थिति में परिवर्तन के संकेत दिखाई देने लगे हैं। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी शिक्षा, रोजगार तथा आधुनिक जीवनशैली की ओर आकर्षित हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक मान्यताओं एवं सांस्कृतिक व्यवहारों में भी बदलाव परिलक्षित हो रहा है। राहे प्रखण्ड के संदर्भ में इन परिवर्तनों का अध्ययन सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

समकालीन समाज में तीव्र सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रभाव से पारंपरिक समुदायों की जीवन पद्धति निरंतर प्रभावित हो रही है। घासी जाति भी इस परिवर्तनशील प्रक्रिया से अछूती नहीं है। शिक्षा, आर्थिक विकास, मीडिया, नगरीकरण तथा सरकारी नीतियों के प्रभाव ने इनके सामाजिक संबंधों, पारिवारिक संरचना, रीति-रिवाजों एवं सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन उत्पन्न किया है। इसके बावजूद यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि इन परिवर्तनों की प्रकृति क्या है तथा उनका समुदाय के सामाजिक जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा है। राहे प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में इस विषय पर सीमित अध्ययन उपलब्ध होने के कारण यह शोध समस्या और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रस्तुत अध्ययन घासी जाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सहायक होगा। इसके माध्यम से समुदाय की वर्तमान सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक व्यवहार, शिक्षा, आर्थिक परिवर्तन तथा आधुनिकता के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सकेगा।

साहित्य समीक्षा

भारतीय समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर विकसित होती रही है। समाजशास्त्रियों तथा मानवशास्त्रियों ने विभिन्न समुदायों की जीवनशैली, सामाजिक संबंधों, परंपराओं तथा आधुनिक प्रभावों का विश्लेषण करते हुए परिवर्तन की प्रकृति को समझाने का प्रयास किया है। अनुसूचित जातियों के संदर्भ में यह प्रक्रिया और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि शिक्षा, नगरीकरण, आर्थिक अवसरों तथा सरकारी नीतियों ने इनके जीवन में व्यापक बदलाव उत्पन्न किए हैं। प्रस्तुत अध्ययन में घासी जाति के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को समझने के लिए पूर्ववर्ती अध्ययनों का अवलोकन आवश्यक है।

भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को स्पष्ट करने में समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण तथा सामाजिक गतिशीलता की अवधारणाओं के माध्यम से यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा, प्रशासनिक व्यवस्था तथा आधुनिक संस्थाओं के प्रभाव से जातीय संरचना में परिवर्तन उत्पन्न होता है[1]। उनकी कृति सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत मानी जाती है।

योगेन्द्र सिंह ने भारतीय परंपरा और आधुनिकता के संबंध का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया कि सामाजिक परिवर्तन केवल बाहरी प्रभावों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आंतरिक सामाजिक प्रक्रियाओं से भी प्रभावित होता है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि भारतीय समाज आधुनिक मूल्यों को स्वीकार करते हुए भी अपनी सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखता है[2]।

जी. एस. घुर्ये ने जाति व्यवस्था, सामाजिक स्तरीकरण तथा सांस्कृतिक संरचना पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके अनुसार भारतीय जाति व्यवस्था सामाजिक संगठन का प्रमुख आधार रही है, जिसमें समय के साथ संरचनात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं[3]।

इसी प्रकार आंद्रे बेतेई ने वर्ग, जाति तथा शक्ति संरचना के अध्ययन के माध्यम से ग्रामीण समाज में परिवर्तनशील सामाजिक संबंधों का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता तथा आर्थिक अवसर सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करते हैं[4]।

सांस्कृतिक परिवर्तन पर किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि आधुनिक शिक्षा, मीडिया, शहरी संपर्क तथा आर्थिक विकास ने समुदायों की जीवनशैली को प्रभावित किया है। एस. सी. दुबे ने ग्रामीण भारत के अध्ययन में यह दर्शाया कि सामुदायिक विकास योजनाओं एवं प्रशासनिक हस्तक्षेपों के कारण ग्रामीण संस्कृति में परिवर्तन उत्पन्न हुआ। उन्होंने पारंपरिक सामाजिक संबंधों तथा आधुनिक संस्थाओं के मध्य विकसित हो रहे संतुलन का उल्लेख किया[5]।

परमानंद नायक के अनुसार घासी समुदाय अनुसूचित जाति के अंतर्गत आता है तथा इसकी अधिक उपस्थिति ओडिशा के रायगड़ा, कोरापुट और कालाहांडी जैसे आदिवासी बहुल क्षेत्रों में पाई जाती है। रायगड़ा जिले में यह समुदाय अनुसूचित जातियों के बीच महत्वपूर्ण जनसंख्या रखता है, किंतु सामाजिक दृष्टि से इसे निम्न स्थिति प्राप्त रही है। समुदाय की आजीविका मुख्यतः श्रम आधारित कार्यों, छोटे व्यापार, मजदूरी तथा कृषि संबंधी गतिविधियों पर निर्भर करती है। महिलाओं की आर्थिक भूमिका भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बिक्री के माध्यम से परिवार की आय में योगदान देती हैं। लेखक के अनुसार घासी समुदाय की सामाजिक संरचना पितृसत्तात्मक एवं पितृवंशीय है। यह समुदाय अंतर्विवाही होते हुए भी विभिन्न बाह्य-विवाही कुलों में विभाजित है। विवाह की परंपराओं में सहमति विवाह, सेवा विवाह, विनिमय विवाह तथा विधवा पुनर्विवाह जैसी प्रथाएँ सामाजिक रूप से स्वीकार्य हैं, जो इसकी लचीली सामाजिक व्यवस्था को दर्शाती हैं[6]।

त्रिलोचन साहू के अनुसार घासी समुदाय का अध्ययन केवल एक जातीय समूह की सामाजिक स्थिति को समझने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संरचना और परिवर्तनशील प्रक्रियाओं का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखक बताते हैं कि घासी समुदाय की पारंपरिक आजीविका श्रम-आधारित गतिविधियों, विशेष रूप से संगीत, मछली पकड़ने तथा स्थानीय संसाधनों पर निर्भर कार्यों से जुड़ी रही है। इन व्यवसायों ने समुदाय की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक पहचान को भी प्रभावित किया है। अध्ययन में यह उल्लेख किया गया है कि परिवार, कुटुंब संबंध, विवाह व्यवस्था और वंश परंपरा घासी समुदाय की सामाजिक संरचना के प्रमुख आधार हैं। धार्मिक विश्वास एवं अनुष्ठान सामुदायिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सामूहिक पहचान को मजबूत बनाते हैं। लेखक के अनुसार सामाजिक पदानुक्रम में इस समुदाय की स्थिति लंबे समय तक निम्न रही, जिसके कारण इन्हें सामाजिक एवं आर्थिक वंचनाओं का सामना करना पड़ा। साहू यह भी स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा, संसाधनों तक सीमित पहुँच और आर्थिक कठिनाइयों ने समुदाय के विकास को प्रभावित किया, किंतु आधुनिक विकास योजनाओं और नीतिगत प्रयासों से उनकी स्थिति में परिवर्तन के संकेत दिखाई देते हैं। अध्ययन यह दर्शाता है कि घासी समुदाय पारंपरिक जीवन-शैली और आधुनिक प्रभावों के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया से गुजर रहा है[7]।

रिज्हु नायक के अनुसार घासी जाति का इतिहास बहुआयामी है तथा इसकी उत्पत्ति और नामकरण के संबंध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में इस समुदाय को अनेक नामों से जाना जाता है और लोग अपने नामों के साथ नायक, मछुवा, राम तथा नाग जैसी उपाधियों का प्रयोग करते हैं। लेखक ने एच. एच. रिस्ले के विचारों का उल्लेख करते हुए बताया कि "घासी" शब्द की कोई निश्चित व्याख्या नहीं है। कुछ मतों के अनुसार यह जाति जन्म और वंश से संबंधित मानी गई, जबकि अन्य दृष्टिकोण इसे पेशागत आधार से जोड़ते हैं। घास काटने, मछली पकड़ने तथा अन्य श्रम-आधारित कार्यों से जुड़े लोगों को भी कई क्षेत्रों में घासी कहा जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि घासी जाति की पहचान सामाजिक और पेशागत दोनों आधारों पर विकसित हुई है।

इसी प्रकार अनुसूचित जातियों से संबंधित अध्ययनों में यह पाया गया है कि सरकारी योजनाओं, आरक्षण व्यवस्था तथा रोजगार के अवसरों के कारण सामाजिक स्थिति में सुधार दिखाई देता है। घासी समुदाय में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता, आधुनिक जीवनशैली की स्वीकृति तथा पारंपरिक सांस्कृतिक व्यवहारों में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। हालाँकि, राहे प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में घासी जाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन पर विस्तृत शोध का अभाव दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है तथा स्थानीय स्तर पर परिवर्तन की प्रकृति को समझने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. घासी जाति के सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. घासी जाति के सांस्कृतिक परिवर्तन का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

1. घासी जाति की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया है।
2. घासी जाति की सांस्कृतिक परंपराओं में परिवर्तन हुआ है।

शोध क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन के लिए झारखण्ड राज्य के राँची जिले अंतर्गत स्थित राहे प्रखण्ड का चयन किया गया है। यह क्षेत्र सामाजिक, सांस्कृतिक तथा जनजातीय विविधता की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। राहे प्रखण्ड 23.2654° उत्तरी अक्षांश तथा 85.6447° पूर्वी देशांतर पर अवस्थित है और निम्न छोटानागपुर पठार का हिस्सा है। यहाँ की औसत ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 500 से 1000 फीट के बीच पाई जाती है। क्षेत्र की भौगोलिक संरचना कृषि व्यवस्था, प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग तथा ग्रामीण जीवन-पद्धति को प्रभावित करती है। राहे प्रखण्ड के उत्तर में अनगड़ा, पूर्व में सिल्ली एवं सोनाहातू, दक्षिण में बुंडू तथा पश्चिम में नामकुम प्रखण्ड स्थित हैं। इस प्रकार यह क्षेत्र विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों से जुड़ा हुआ है, जिसके कारण यहाँ सामाजिक एवं आर्थिक संपर्क निरंतर बने रहते हैं। प्रशासनिक दृष्टि से यह एक सामुदायिक विकास प्रखण्ड है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 180.42 वर्ग किलोमीटर है। इसका मुख्यालय राहे गाँव में स्थित है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राहे प्रखण्ड की कुल जनसंख्या 53,916 थी, जिसमें 27,334 पुरुष तथा 26,582 महिलाएँ शामिल थीं। बाल जनसंख्या (0–6 वर्ष) 7,532 दर्ज की गई, जो क्षेत्र में युवा आबादी की महत्वपूर्ण उपस्थिति को दर्शाती

है। अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 3,502 तथा अनुसूचित जनजातियों की संख्या 17,311 थी[8]। इससे स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र सामाजिक रूप से विविध तथा जनजातीय बहुल विशेषता रखता है। घासी जाति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए राहे प्रखण्ड उपयुक्त क्षेत्र माना गया, क्योंकि यहाँ पारंपरिक जीवनशैली और आधुनिक प्रभाव दोनों समान रूप से दिखाई देते हैं। शिक्षा, रोजगार, सरकारी योजनाओं तथा सामाजिक संपर्क के कारण समुदाय के जीवन में परिवर्तन की प्रक्रियाएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं।

शोध पद्धति एवं प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन में वैज्ञानिक शोध पद्धति तथा वर्णनात्मक शोध प्रारूप का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य घासी जाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करना है। शोध के दौरान असहभागी अवलोकन पद्धति को अपनाया गया, जिसके माध्यम से समुदाय के दैनिक जीवन, व्यवहार तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन किया गया। प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार तथा साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया। अध्ययन के अंतर्गत राहे प्रखण्ड के घासी समुदाय से संबंधित 70 उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिनसे प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन से संबंधित आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत पुस्तकें, शोध लेख, जनगणना रिपोर्ट, सरकारी दस्तावेज तथा संबंधित प्रकाशनों का उपयोग किया गया। अध्ययन हेतु उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति के आधार पर किया गया। संकलित तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीकरण तथा विश्लेषण सामाजिक शोध की उपयुक्त तकनीकों के माध्यम से किया गया, जिससे घासी जाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रकृति को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

घासी जाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन

2011 की जनगणना के अनुसार झारखण्ड में घासी जाति की कुल जनसंख्या 1,50,520 दर्ज की गई, जिसमें 75,320 पुरुष और 75,200 महिलाएँ शामिल हैं। यह आँकड़ा समुदाय में संतुलित लिंगानुपात को दर्शाता है[9]। राँची जिले में इस जाति की जनसंख्या 35,178 पाई गई, जो राज्य में इसकी महत्वपूर्ण उपस्थिति को इंगित करती है। घासी समुदाय की प्रमुख भाषा नागपुरी है, जो दैनिक संचार के साथ-साथ उनकी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

तालिका 1.1 शिक्षा की स्थिति

शिक्षा स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
अशिक्षित	18	25.71
प्राथमिक शिक्षित	22	31.43
माध्यमिक शिक्षित	16	22.86
उच्च माध्यमिक	9	12.86
स्नातक एवं अधिक	5	7.14

शिक्षा स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
कुल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि घासी समुदाय में शिक्षा का स्तर अभी भी निम्न से मध्यम श्रेणी के बीच स्थित है। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 22 उत्तरदाता (31.43 प्रतिशत) प्राथमिक स्तर तक शिक्षित पाए गए, जबकि 18 उत्तरदाता (25.71 प्रतिशत) अशिक्षित थे। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या 16 (22.86 प्रतिशत) रही। उच्च माध्यमिक स्तर तक पहुँचने वाले 9 उत्तरदाता (12.86 प्रतिशत) पाए गए, जबकि स्नातक एवं उससे अधिक शिक्षा प्राप्त करने वाले केवल 5 उत्तरदाता (7.14 प्रतिशत) थे। यह स्थिति दर्शाती है कि समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता तो बढ़ रही है, किंतु आर्थिक सीमाएँ, संसाधनों की कमी तथा सामाजिक परिस्थितियाँ उच्च शिक्षा के विस्तार में अभी भी बाधक बनी हुई हैं।

तालिका 1.2 आर्थिक स्थिति

आर्थिक गतिविधि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
कृषि एवं कृषि मजदूरी	24	34.29
दिहाड़ी मजदूरी	20	28.57
पारंपरिक व्यवसाय	11	15.71
छोटा व्यापार	8	11.43
सरकारी/निजी नौकरी	7	10.00
कुल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि घासी समुदाय की आर्थिक संरचना मुख्यतः श्रम आधारित कार्यों पर निर्भर है। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में से 24 उत्तरदाता (34.29 प्रतिशत) कृषि एवं कृषि मजदूरी से जुड़े पाए गए, जो समुदाय की ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को दर्शाता है। 20 उत्तरदाता (28.57 प्रतिशत) दिहाड़ी मजदूरी पर निर्भर थे, जिससे अस्थायी आय के स्रोतों की अधिकता का पता चलता है। पारंपरिक व्यवसाय से जुड़े उत्तरदाताओं की संख्या 11 (15.71 प्रतिशत) रही, जबकि 8 उत्तरदाता (11.43 प्रतिशत) छोटे व्यापार में संलग्न पाए गए। सरकारी एवं निजी नौकरी करने वालों की संख्या केवल 7 (10 प्रतिशत) थी। यह स्थिति दर्शाती है कि समुदाय में स्थायी रोजगार के अवसर सीमित हैं तथा अधिकांश परिवार आज भी निम्न आय वाले व्यवसायों पर निर्भर हैं।

तालिका 1.3 राजनीतिक एवं सामाजिक जागरूकता

जागरूकता का स्तर	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
पंचायत एवं चुनाव में सक्रिय भागीदारी	28	40.00
सरकारी योजनाओं की जानकारी	19	27.14
सामाजिक संगठनों से जुड़ाव	13	18.57
सीमित जागरूकता	10	14.29
कूल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि घासी समुदाय में राजनीतिक एवं सामाजिक जागरूकता का स्तर धीरे-धीरे विकसित हो रहा है। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में से 28 उत्तरदाता (40 प्रतिशत) पंचायत एवं चुनावी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करते पाए गए, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के प्रति बढ़ती रुचि को दर्शाता है। 19 उत्तरदाता (27.14 प्रतिशत) सरकारी योजनाओं की जानकारी रखते थे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रति समुदाय में जागरूकता बढ़ रही है। सामाजिक संगठनों से जुड़े उत्तरदाताओं की संख्या 13 (18.57 प्रतिशत) रही, जबकि 10 उत्तरदाता (14.29 प्रतिशत) सीमित जागरूकता वाले पाए गए। यह स्थिति संकेत करती है कि सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना में वृद्धि हुई है, किंतु समुदाय के एक वर्ग तक जागरूकता अभी भी पूर्ण रूप से नहीं पहुँच पाई है।

तालिका 1.4 रीति-रिवाज एवं परंपराएँ

रीति-रिवाज एवं परंपराओं की स्थिति	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन	32	45.71
आंशिक परिवर्तन	25	35.71
आधुनिक परंपराओं की स्वीकृति	13	18.58
कुल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि घासी समुदाय में पारंपरिक रीति-रिवाजों एवं सांस्कृतिक परंपराओं का प्रभाव अभी भी प्रमुख रूप से विद्यमान है। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में से 32 उत्तरदाता (45.71 प्रतिशत) पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करते पाए गए। वहीं 25 उत्तरदाता (35.71

प्रतिशत) ऐसे थे, जिनके जीवन में आंशिक परिवर्तन दिखाई दिया, जहाँ परंपरागत और आधुनिक दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ मौजूद थीं। इसके अतिरिक्त 13 उत्तरदाता (18.58 प्रतिशत) आधुनिक परंपराओं को स्वीकार करते पाए गए। यह स्थिति दर्शाती है कि समुदाय पूरी तरह से पारंपरिक स्वरूप में सीमित नहीं है, बल्कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों और आधुनिक प्रभावों के साथ अपनी जीवनशैली में धीरे-धीरे परिवर्तन अपना रहा है।

तालिका 1.5 पहनावा एवं खान-पान

पहनावा एवं खान-पान की स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पारंपरिक पहनावा एवं भोजन	27	38.57
मिश्रित जीवनशैली	30	42.86
आधुनिक पहनावा एवं खान-पान	13	18.57
कुल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि घासी समुदाय के पहनावे एवं खान-पान में पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में से 30 उत्तरदाता (42.86 प्रतिशत) मिश्रित जीवनशैली अपनाते पाए गए, जहाँ पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के पहनावे एवं भोजन का प्रभाव मौजूद था। 27 उत्तरदाता (38.57 प्रतिशत) अब भी पारंपरिक पहनावा एवं भोजन को प्राथमिकता देते हैं, जो समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है। वहीं 13 उत्तरदाता (18.57 प्रतिशत) आधुनिक पहनावा एवं खान-पान को अपनाते पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि बदलती सामाजिक परिस्थितियों, शिक्षा, शहरी संपर्क और मीडिया के प्रभाव से समुदाय की जीवनशैली में धीरे-धीरे परिवर्तन विकसित हो रहा है।

तालिका 1.6 धार्मिक विश्वास

धार्मिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पारंपरिक धार्मिक आस्था	36	51.43
पारंपरिक एवं आधुनिक मान्यताओं का मिश्रण	22	31.43
आधुनिक धार्मिक दृष्टिकोण	12	17.14
कुल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि घासी समुदाय में पारंपरिक धार्मिक आस्थाओं का प्रभाव अभी भी प्रमुख रूप से विद्यमान है। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में से 36 उत्तरदाता (51.43 प्रतिशत) पारंपरिक धार्मिक विश्वासों का पालन करते पाए गए। वहीं 22 उत्तरदाता (31.43 प्रतिशत) ऐसे थे, जिनके धार्मिक विचारों में पारंपरिक एवं आधुनिक मान्यताओं का मिश्रण दिखाई दिया। इसके अतिरिक्त 12 उत्तरदाता (17.14 प्रतिशत) आधुनिक धार्मिक दृष्टिकोण को स्वीकार करते पाए गए। यह स्थिति दर्शाती है कि समुदाय में धार्मिक परंपराएँ अभी भी महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, किंतु शिक्षा, आधुनिक संपर्क तथा सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव से धार्मिक सोच में धीरे-धीरे बदलाव भी विकसित हो रहा है।

तालिका 1.7 आधुनिकता एवं मीडिया का प्रभाव

आधुनिकता एवं मीडिया का प्रभाव	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत**
अधिक प्रभाव	29	41.43
मध्यम प्रभाव	26	37.14
कम प्रभाव	15	21.43
कुल	**70**	**100**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि घासी समुदाय के जीवन पर आधुनिकता एवं मीडिया का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अध्ययन में शामिल 70 उत्तरदाताओं में से 29 उत्तरदाता (41.43 प्रतिशत) ऐसे पाए गए, जिन्होंने स्वीकार किया कि आधुनिक संचार माध्यमों और बदलती जीवनशैली का उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर अधिक प्रभाव पड़ा है। वहीं 26 उत्तरदाता (37.14 प्रतिशत) मध्यम स्तर के प्रभाव से प्रभावित पाए गए। इसके अतिरिक्त 15 उत्तरदाता (21.43 प्रतिशत) ऐसे थे, जिन पर आधुनिकता एवं मीडिया का प्रभाव अपेक्षाकृत कम दिखाई दिया। यह स्थिति दर्शाती है कि मोबाइल फोन, टेलीविजन, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया जैसे साधनों ने समुदाय की सोच, व्यवहार और जीवनशैली में धीरे-धीरे परिवर्तन उत्पन्न किया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राहे प्रखण्ड का घासी समुदाय धीरे-धीरे सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को अनुभव कर रहा है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों, शिक्षा के प्रसार, सरकारी योजनाओं, संचार माध्यमों तथा आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव ने समुदाय के जीवन में कई नए परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। अध्ययन के लिए चयनित 70 उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह पाया गया कि

समुदाय आज पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है। शिक्षा की स्थिति से संबंधित आंकड़ों से ज्ञात हुआ कि समुदाय में साक्षरता पहले की अपेक्षा बेहतर हुई है, किंतु उच्च शिक्षा तक पहुँच अभी भी सीमित है। तालिका के अनुसार 31.43 प्रतिशत उत्तरदाता केवल प्राथमिक स्तर तक शिक्षित पाए गए, जबकि स्नातक और उससे अधिक शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या मात्र 7.14 प्रतिशत थी। इससे यह समझा जा सकता है कि आर्थिक समस्याएँ और संसाधनों की कमी शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी प्रमुख बाधा बनी हुई हैं। आर्थिक स्थिति के अध्ययन से यह सामने आया कि अधिकांश परिवार आज भी कृषि मजदूरी और दिहाड़ी कार्य पर निर्भर हैं। तालिका के अनुसार 34.29 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि एवं कृषि मजदूरी से जुड़े हुए थे, जबकि 28.57 प्रतिशत लोग दैनिक मजदूरी करते पाए गए। कुछ परिवार छोटे व्यापार तथा सरकारी या निजी रोजगार से भी जुड़े हैं, जो समुदाय में धीरे-धीरे बढ़ते आर्थिक परिवर्तन को दर्शाता है। राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता के स्तर में भी वृद्धि दिखाई देती है। पंचायत चुनाव, सरकारी योजनाओं और सामाजिक कार्यक्रमों के प्रति समुदाय में पहले की तुलना में अधिक रुचि देखी गई। अध्ययन में 40 प्रतिशत उत्तरदाता पंचायत और चुनावी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते पाए गए। इससे समुदाय में सामाजिक चेतना और लोकतांत्रिक सहभागिता के विकास का संकेत मिलता है।

सांस्कृतिक जीवन के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि घासी समुदाय अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखने के साथ-साथ आधुनिक जीवनशैली को भी अपना रहा है। रीति-रिवाज और परंपराओं संबंधी आंकड़ों के अनुसार 45.71 प्रतिशत उत्तरदाता अभी भी पारंपरिक प्रथाओं का पालन करते हैं, जबकि कई लोगों के जीवन में आधुनिक प्रभाव दिखाई देते हैं। पहनावा, खान-पान और धार्मिक विश्वासों में भी पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ देखने को मिलीं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि मीडिया और आधुनिक संचार साधनों का समुदाय पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है। मोबाइल फोन, टेलीविजन और सोशल मीडिया के उपयोग ने लोगों की सोच, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित किया है। तालिका के अनुसार 41.43 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि आधुनिक मीडिया ने उनके जीवन में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि राहे प्रखण्ड का घासी समुदाय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यद्यपि आर्थिक कठिनाइयाँ, सीमित शैक्षिक अवसर और संसाधनों की कमी अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, फिर भी शिक्षा, जागरूकता और सरकारी योजनाओं के माध्यम से समुदाय की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार दिखाई दे रहा है।

संदर्भ सूची:-

---

[1] श्रीनिवास मैसूर नरसिम्हाचार (1995), सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, ओरिएंट ब्लैकस्वान, तेलंगाना

[2] सिंह योगेंद्र (1973), मॉडर्नाइजेशन ऑफ़ इंडियन ट्रेडिशन: ए सिस्टेमेटिक स्टडी ऑफ़ सोशल चेंज, थॉमसन प्रेस (इंडिया), न्यू दिल्ली

[3] घुर्ये गोविंद सदाशिव (1969), कास्ट एंड रेस इन इंडिया, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई

[4] बेतेई आंद्रे (1996), कास्ट, क्लास एंड पॉवर: चेंजिंग पैटर्न ऑफ स्टारटीफीकेसन इन अ तंजावूर विलेज, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.के.

[5] दुबे एस.सी. (2017), इंडियन विलेज, टेलर एंड फ्रांसिस यू.के

[6] नायक परमानंद (2022), एथ्नोग्रफि ऑफ़ द घासी कम्युनिटीज इन उड़ीसा, शोधसंहिता: जर्नल ऑफ़ फंडामेंटल एंड कम्पेरेटिव रिसर्च, वॉल्यूम. VIII, नंबर 1(XXVIII): 2022

[7] साहू त्रिलोचन (1991), द घासी: अ सेदुल्ड कास्ट कम्युनिटी ऑफ उड़ीसा, आदिवासी एवं हरिजन अनुसंधान-सह-प्रशिक्षण संस्थान, उड़ीसा

[8] डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैंडबुक (2011), राँची

[9] नायक, रिझु (2019), घासी जाति: संस्कृति और इतिहास, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध
ISSN 2321 – 9726
WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY
ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)
WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE
ISSN 2319 – 9202
WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES
ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)
WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY
ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION
ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM